एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# आम के प्रमुख कीट एवं रोग तथा उनका प्रबंधन

*राजू कुमार वर्मा[1], अंकित सिंह[1], प्रिंस साहू[2], डॉ. एस. के. सिंह[3] एवं डॉ. ए. के. श्रीवास्तव[4]
[1]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, उत्तर प्रदेश
[2]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश
[3]प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष, कीट विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, बाँदा, उत्तर प्रदेश
[4]प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष, फल विज्ञान विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, बाँदा, उत्तर प्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rajuverma502860@gmail.com

आम जिसे "फलों का राजा" कहा जाता है, अपने स्वाद और पोषण मूल्य के कारण पूरी दुनिया में लोकप्रिय है। इसकी खेती उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडु, उडीसा, महाराष्ट्र, और गुजरात में व्यापक स्तर पर की जाती है। लेकिन, आम की खेती में कई चुनौतियाँ होती हैं, खासकर आम के प्रमुख कीट और आम में लगने वाले प्रमुख रोगों,जो पैदावार को कम करने मे अहम भूमिका निभाते हैं और फलों की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। जनवरी महीने में आम के पेड़ों में बौर आना शुरू हो जाता है। इसलिए किसानों को अच्छा उत्पादन पाने के लिए अभी से इसकी देखभाल करनी होगी। क्योंकि अगर जरा सी चूक हुई तो रोग और कीट पूरी फसल को बर्बाद कर सकते हैं। इस समय किसानों को बाग में सिंचाई कर देनी चाहिए, जिससे नमी बनी रहे। किसानों को इस समय पेड़ों पर कीटनाशकों का छिड़काव कर देना चाहिए, इसके बाद दूसरा छिड़काव जब फल चने के बराबर हो जाएं तब करना चाहिए," बागवानी विभाग के ज्वाइंट डायरेक्टर आर० पी० सिंह ने बताया, "जिस समय पेड़ों पर बौर लगा हो उस समय किसी भी कीटनाशक का छिड़काव नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसका परागण हवा या मक्खियों द्वारा होता है। अगर कीटनाशक का छिड़काव कर दिया तो मक्खिया मर जाएंगी और बौर पर नमी होने के कारण परागण नहीं हो पाएगा, जिससे फल बहुत कम आएंगे।" आम की फसल में इस समय हॉपर कीट लगने का खतरा रहता है।यह कीट पत्तियों और बौर से रस चूसता रहता है, इसका असर अगर ज्यादा हो गया तो पेड़ में फल नहीं आता है। इस लिए समय पर कीटनाशकों का प्रयोग करें।

**आम पर लगने वाले प्रमुख कीट**

**मैंगो हॉपर-**नवनियुक्त निम्फ युवा पत्तियों और विकासशील फूलों के गुच्छों के रस को खाना पसंद करते हैं। यह रस चूसने से पत्तियां कमजोर हो जाती हैं और फूल विकृत या क्षतिग्रस्त हो सकते हैं, जिससे फल लगने पर असर पड़ता है। निम्फ चिपचिपे शहद का स्राव करते हैं, चींटियों को आकर्षित करते हैं और कालिखयुक्त फफूंद के विकास को बढ़ावा देते हैं, जिससे पौधों के स्वास्थ्य और प्रकाश संश्लेषण पर और अधिक प्रभाव पड़ता है।

**रोकथाम-** खेत को साफ रखें और पुराने संक्रमित पत्तों को हटा दें, तथा अधिक संक्रमण होने पर थियामेथोक्सम 12.6 प्रतिशत लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत ८० मिली प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करे।

| | |
|---|---|
| **गुठली का घुन (स्टोन वीविल)-** यह कीट घुन वाली इल्ली की तरह होता है। जो आम की गुठली में छेद करके घुस जाता है और उसके अन्दर अपना भोजन बनाता रहता है। कुछ दिनों बाद ये गूदे में पहुंच जाता है और उसे हानि पहुंचाता है। कुछ देशों ने इस कीट से ग्रसित बागों से आम का आयात पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया था।<br>**रोकथाम-** इस कीड़े को नियंत्रित करना थोड़ा कठिन होता है इसलिए जिस भी पेड़ से फल नीचे गिरें उस पेड़ की सूखी पत्तियों और शाखाओं को नष्ट कर देना चाहिए। इससे कुछ हद तक कीड़े की रोकथाम हो जाती है। | |
| **आम शाखा बेधक-** केवल व्यस्क कीट मुख्य तने या शाखा में टेढ़े-मेढ़े सुरंग का निर्माण होता है जिसके परिणामस्वरूप तना एवं शाखायें सूख जाती है।<br>**रोकथाम-** मुख्य तने में छेद के अंदर कीटों के विष्ठा को निकालें और मिट्टी तेल या पेट्रोल या क्लोरोफॉर्म का 5 मि.ली. की दर से छेद के अंदर सुई लगायें तथा छेद को कपास या कीचड़ सें बंद कर दें जिससे लार्वा की अंदर ही मृत्यु हो जाती है । | |
| **जाला कीट (टेन्ट केटरपिलर)-** प्रारम्भिक अवस्था में यह कीट पत्तियों की ऊपरी सतह को तेजी से खाता है। उसके बाद पत्तियों का जाल या टेन्ट बनाकर उसके अन्दर छिप जाता है और पत्तियों को खाना जारी रखता है।<br>**रोकथाम-** पहला उपाय तो यह है कि एजाडीरेक्टिन 3000 पीपीएम ताकत का 2 मिली लीटर को पानी में घोलकर छिड़काव करें। दूसरा संभव उपाय यह किया जा सकता है कि जुलाई के महीने में कुइनोलफास 0.05 फीसदी या मोनोक्रोटोफास 0.05 फीसदी का 2-3 बार छिड़काव करें। | |
| **फल मक्खियाँ (बैक्ट्रोसेरा डॉर्सालिस)-** फल मक्खियाँ आम के अंदर अंडे देती हैं, जिससे लार्वा का संक्रमण होता है और फल समय से पहले गिर जाते हैं। संक्रमित फल नरम, रंगहीन और बेचने लायक नहीं रह जाते।<br>**रोकथाम-** इन उपायों से अपने फलं को बचाएं जीवन चक्र को तोड़ने के लिए गिरे हुए और संक्रमित फलों को हटा दें जैविक नियंत्रण एजेंट लागू करें जैसे डायचस्मिमोर्फा लोंगिकौडाटा परजीवी ततैया। | |
| **दीमक-** दीमक सफेद, चमकीले एवं मिट्टी के अन्दर रहने वाले कीट हैं। यह जड़ को खाता है उसके बाद सुरंग बनाकर ऊपर की ओर बढ़ता जाता है। यह तने के ऊपर कीचड़ का जमाव करके अपने आप को सुरक्षित करता है।<br>**रोकथाम-** इन उपायों से अपने पेड़ों को बचाएं तने के ऊपर से कीचड़ के जमाव को हटाना चाहिए।तने के ऊपर ५ मिली० इमिडाकलोपरिड २० ई०सी० प्रति लीटर का छिड़काव करें। दीमक से छुटकारा मिलने के दो महीने बाद पेड़ के तने को मोनोक्रोटोफास (1 मिली प्रति लीटर) से मिट्टी पर छिड़काव करें।दस ग्राम प्रति लीटर बिवेरिया बेसिआना का घोल बनाकर छिड़काव करें। | |
| **भुनगा कीट-** यह कीट आम की फसल को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। इस कीट के लार्वा एवं वयस्क कीट कोमल पत्तियों एवं पुष्पक्रमों का रस चूसकर हानि पहुचाते हैं। इसकी मादा 100-200 तक अंडे नई पत्तियों एवं मुलायम प्ररोह में देती है, और इनका जीवन चक्र 12-22 दिनों में पूरा हो जाता है। इसका प्रकोप जनवरी-फरवरी से शुरू हो जाता है।<br>**रोकथाम-** इस कीट से बचने के लिए बिवेरिया बेसिआना फफूंद के 0.5 फीसदी घोल का छिड़काव करें। नीम तेल 3000 पीपीएम प्रति 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर, घोल का छिड़काव करके भी निजात पाया जा सकता है। इसके अलावा कुइनोल्फास 0.063 फीसदी का घोल बनाकर छिड़काव करने से भी राहत मिल जाएगी। | |

**आम पर लगने वाले रोग व उनसे बचाव के उपाय**

| | |
|---|---|
| **सफेद चूर्णी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू)-** बौर आने की अवस्था में यदि मौसम बदली वाला हो या बरसात हो रही हो तो यह बीमारी लग जाती है। इस बीमारी के प्रभाव से रोगग्रस्त भाग सफेद दिखाई पडने लगता है। इसकी वजह से मंजरियां और फूल सूखकर गिर जाते हैं।<br>**रोकथाम-** इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही आम के पेड़ों पर 5 प्रतिशत वाले गंधक के घोल का छिड़काव करें। इसके अलावा 500 लीटर पानी में 250 ग्राम कैराथेन घोलकर छिड़काव करने से भी बीमारी पर काबू पाया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में बौर आने के समय मौसम असामान्य रहा हो वहां हर हालत में सुरक्षात्मक उपाय के आधार पर 0.2 प्रतिशत वाले गंधक के घोल का छिड़काव करें एवं आवश्यकतानुसार दोहराएं। | |
| **कालवूणा (एन्थ्रेक्नोस)-** यह बीमारी अधिक नमी वाले क्षेत्रों में अधिक पाई जाती है। इसका आक्रमण पौधों के पत्तों, शाखाओं, और फूलों जैसे मुलायम भागों पर अधिक होता है। प्रभावित हिस्सों में गहरे भूरे रंग के धब्बे आ जाते हैं।<br>**रोकथाम-** 0.2 प्रतिशत जिनैब का छिड़काव करें। जिन क्षेत्रों में इस रोग की सम्भावना अधिक हो वहां सुरक्षा के तौर पर पहले ही घोल का छिड़काव करें। | |
| **ब्लैक टिप (कोएलिया रोग)-** यह रोग ईंट के भट्ठों के आसपास के क्षेत्रों में उससे निकलने वाली गैस सल्फर डाई ऑक्साइड के कारण होता है। इस बीमारी में सबसे पहले फल का आगे का भाग काला पडने लगता है इसके बाद ऊपरी हिस्सा पीला पड़ता है। इसके बाद गहरा भूरा और अंत में काला हो जाता है। यह रोग दशहरी किस्म में अधिक होता है।<br>**रोकथाम-**इस रोग से फसल बचाने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि ईंट के भट्ठों की चिमनी आम के पूरे मौसम के दौरान लगभग 50 फुट ऊंची रखी जाए। इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही बोरेक्स 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से बने घोल का छिड़काव करें। फलों के बढ़वार की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान आम के पेड़ों पर 0.6 प्रतिशत बोरेक्स के दो छिड़काव फूल आने से पहले तथा तीसरा फूल बनने के बाद करें। जब फल मटर के दाने के बराबर हो जाएं तो 15 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव करने चाहिए। | |
| **गुच्छा रोग-** इस बीमारी का मुख्य लक्षण यह है कि इसमें पूरा बौर नपुंसक फूलों का एक ठोस गुच्छा बन जाता है।<br>**रोकथाम-** इस बीमारी का नियंत्रण प्रभावित बौर और शाखाओं को तोड़कर किया जा सकता है। अक्टूबर माह में 200 प्रति दस लक्षांश वाले नेप्थालिन एसिटिक एसिड का छिड़काव करना और कलियां आने की अवस्था में जनवरी के महीने में पेड़ के बौर तोड़ देना भी लाभदायक रहता है क्योंकि इससे न केवल आम की उपज बढ़ जाती है बल्कि इस बीमारी के आगे फैलने की संभावना भी कम हो जाती है। | |
| **डाई बैक-** इस रोग में आम की टहनी ऊपर से नीचे की ओर सूखने लगती है और धीरे-धीरे पूरा पेड़ सूख जाता है। यह फफूंद जनित रोग होता है, जिससे तने की जलवाहिनी में भूरापन आ जाता है और वाहिनी सूख जाती है एवं जल ऊपर नहीं चढ़ पाता है<br>**रोकथाम-** इसकी रोकथाम के लिए रोग ग्रसित टहनियों के सूखे भाग को 15 सेमी नीचे से काट कर जला दें। कटे स्थान पर बोर्डो पेस्ट लगाएं तथा अक्टूबर माह में कॉपर ऑक्सी कलोराइड का 0.3 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। | |

**सारांश**

स्वस्थ आम की फसल सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय कीट और रोग प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इन प्रथाओं को प्राथमिकता देने से न केवल उपज बढ़ती है बल्कि टिकाऊ कृषि प्रथाओं में भी योगदान मिलता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि आम दुनिया भर में एक प्रिय फल बना रहे। इन प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके, आम उत्पादक अपने पेड़ों के लिए इष्टतम स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं, साथ ही प्रभावी आम कीट और रोग प्रबंधन रणनीतियों के माध्यम से अपनी फसल क्षमता को अधिकतम कर सकते हैं। आम के प्रमुख कीटों और रोगों के साथ-साथ उनके नियंत्रण के तरीकों को समझना सफल खेती के लिए आवश्यक है। इष्टतम परिणामों के लिए, जैविक समाधानों के साथ रासायनिक नियंत्रण को एकीकृत करने से कीटों और रोगों दोनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में बेहतर परिणाम सुनिश्चित होते हैं।

घाम झुले पत्ता-पत्ता, किसान करे संधान।
रस भरे जब आम हों, तब खिल उठे जहान॥